EIS
ISSN - 2229-3620
APPROVED UGC CARE
SHODH SANCHAR BULLETIN
Vol. 10, Issue 40 October-December 2020
Page Nos.142-146
AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

कवियों के कवि शमशेर

❑ डॉ० रवीन्द्र कुमार सिंह

सारांश

शमशेर बहादुर सिंह को हम कवि रूप में जानते हैं, यहाँ तक कि उन्हें 'कवियों का कवि' मान लिया गया है। उनकी छवि एक अतिसंवेदनशील और भावुक व्यक्ति की बन गयी है जो अपनी रौ में बहता हुआ न मालूम क्या कह जायें? सौन्दर्य और प्रेम के दर्शन 'भावात्मक अद्वैतवाद' वा सूफीवाद के प्रभाव से लिखी गयी शमशेर की ये पंक्तियाँ–

बहुत नाम हैं एक 'शमशेर' भी है
किसे पूछते हो, किसे हम बताएँ।[1]

न केवल शमशेर के व्यक्तित्व बल्कि उनके रचना–संसार में निहित 'प्रेम' और 'सौन्दर्य' के विविध रंगों का उद्घाटन करने वाली है। बहुत से नामों में एक शमशेर भी है– अन्य कवियों, अन्य व्यक्तियों की तरह; लेकिन जिसे आप पूछ रहें हैं उसको हम कैसे बताएँ? क्योंकि वह तो अनेकानेक कवियों में एक विशिष्ट कवि है। सांकेतिक रूप में ही सही यहाँ पर स्पष्ट है कि– शमशेर की 'सौन्दर्य' और 'प्रेम' चेतना व्यापक है क्योंकि उनका 'निज' उन्हें एकाकी नहीं बनने देता। कविता के निजी पलों में तो कवि के साथ संपूर्ण संसार भी उसमें साँस लेने लगता है – 'प्रेम का कँवल कितना विशाल हो जाता है। आकाश जितना।.....[2]....

* अध्यक्ष हिंदी विभाग, राजाहरपाल सिंह महाविद्यालय सिंगरामऊ जौनपुर

भावात्मक अद्वैतवाद और व्यक्तिवादी स्वभाव से उपजी 'सौन्दर्य' और 'प्रेम' चेतना शमशेर के काव्य में दो रूपों में देखी जा सकती है– व्यष्टि और समष्टिवादी रूप में व्यष्टि रूप में शमशेर के सौन्दर्य और प्रेम में गजब का समर्पण, उदात्तता, ओज और तेज देखने को मिलती है, जिसमें न तो कहीं दैन्य है और न ही शिथिलता –

"चुका भी हूँ मैं नहीं / कहाँ किया मैंने प्रेम अभी।
जब करूँगा प्रेम / पिघल उठेंगे।
युगों के भूधर / उफन उठेंगे / सात सागर।[3]

इन पंक्तियों से स्पष्ट है कि शमशेर प्रेम में अहंभाव का विलयन करते हैं, अपने व्यक्तित्व का नहीं, ठीक छायावादी कवियों की तरह। छायावादी कवि जहाँ 'आध्यात्मिक अद्वैतवाद' के घेरे में प्रेम और सौन्दर्य का

Scanned with OKEN Scanner

चित्रण करते है वही शमशेर कुछ स्थलों पर 'भावात्मक अद्वैतवाद के घेरे को तोड़ते हुए उद्दाय चित्र प्रस्तुत करते हैं जिसमें कोई दुराव–छिपाव नहीं है, कोई आवरण नहीं है–

एक छोटा वदन अष्टधातु का सा/सचमुच,
जंघाएँ दो ठोस दरिया/घेरे हुए से,
ठोस वक्ष उभरे हुए/चारों नियंत्रण देते।'[4]

या

'यह पूरा/कोमल काँसे में ढला,
गोलाइयों का आइना/मेरे सीने से कसकर भी आजाद है,
जैसे किसी खुले बाग में/सुबह की सादी,
भाव–भीनी हवा।'[5]

वह सलोना जिस्म/उसकी अधखुली अंगड़ाइयाँ है,
कमल के लिपटे हुए दल/कसे भीनी गंध में बेहोश भौरे को।[6]

इन कविताओं में ऐसा लगता है जैसे शमशेर का शमशेर उभर आया हो, एक सामान्य आदमी की तरह। इसलिए वह प्रेम और सौन्दर्य अलौकिक नहीं, उदात्त नहीं बल्कि देह जनित प्रेम और सौन्दर्य है। मानवीय प्रेम और सौन्दर्य है परन्तु कुछ विशिष्ट भाव–भूमियों या संवेगों में लिखी गयी इन कविताओं को परे रखकर देखें तो सर्वत्र शमशेर की कविता में एक रूहानी अंदाज देखने को मिलता है। स्वयं शमशेर की स्वीकारोक्ति है कि –

सौन्दर्य/जो त्वचा में नहीं,
थिरकते रक्त में नहीं,
मस्तिष्क में नहीं/नहीं/कहीं इनके पार से,
बरसता है अणु–अणु पल–पल में।[7]

सौन्दर्य के इस रूप हेतु अहम्/निजत्व सबसे बड़ी बाधा है, इसीलिए शमशेर ने अहम् के विलयन पर अपनी कविताओं में विशेष बल दिया है–

"काश कि मैं न होऊँ/ न होऊँ
तो कितना अधिक विस्तार
किसी पावन विशेष सौन्दर्य का
अवतरित हो/पावन विशेष सौन्दर्य का[8]

या

फिर किसने यह, सातों सागर के पार
एकाकीपन से ही, मानो हार/एकाकी उठ मुझे पुकारा
कई बाई?/मैं समाज तो नहीं
न मैं कुल जीवन, कण समूह में हूँ
मैं केवल एक–कण/कौन सहारा! मेरा कौन सहारा।'[9]

मेरी आत्मा की / शाश्वत / तू ही रखवाली / करेगा
एक–एक क्षण एक–एक कण / मेरा मैं मरेगा।[10]

यहाँ ध्यान देने की बात है कि प्रेम और सौन्दर्य में पगी हुई रोमानी वैयक्तिकता शमशेर के सन्दर्भ में बड़ी ही विशिष्ट है। विशिष्ट इस अर्थ में कि जहाँ एक ओर अनेक कवि इस रोमानी वैयक्तिकता में ऐसे डूबे की फिर बाहर ही नहीं आ सके, वहीं शमशेर के लिए तो यह रोमानी वैयक्तिकता उन्हें व्यष्टि से समष्टि की ओर प्रेरित करने वाली साबित हुई। इस तरह वैयक्तिक प्रेम और सौन्दर्य अब उनमें सामाजिकता का स्पर्श करने लगता है। ऐसे में कुछ इस अर्थ में शमशेर जीवन–सौन्दर्य और प्रेम को स्वीकार करने लगते हैं–

हाँ, तुम मुझसे प्रेम करो जैसे मछलियाँ लहरों से करती हैं
.....जिनमें वह फँसने नहीं आती,
जैसे हवाएँ मेरे सीने से करती हैं
जिसको वह गहराई दबा नहीं पाती,
तुम मुझसे प्रेम करो जैस मैं तुमसे करता हूँ।[11]

व्यष्टि से समष्टि की तरफ की यह यात्रा अनायास ही घटित नहीं होती। इसके पीछे मूल कारण रहा है शमशेर का अनुभूति के स्तर पर रूमानी व्यक्तित्व से प्रभावित होना, परन्तु बौद्धिक स्तर पर मार्क्सवाद से प्रभावित होना। इसलिए शमशेर की कविताएँ जहाँ एक तरफ छायावाद की सीमा को छूती हैं–

'भूल कर जब राह–' जब–जब राह.....भटका मैं
तुम्हीं झलके, हे महाकवि,
सघन तम की आँख बन मेरे लिए।[12]

तो वहीं दूसरी तरफ प्रगतिशीलता को व्याप्त करते हुए प्रयोगशीलता की सीमा को अतिक्रमित कर जाती है। वे 'चीन देश का नाम' नामक कविता में उसकी उन्नति पर प्रसन्नता व्यक्त करते हैं, 'वाम वाम वाम दिशा' कविता में मार्क्स के व्यापक प्रभाव की चर्चा करते हैं, कहीं मजदूरों के जुलूस की चर्चा करते हैं और कहीं किसी कामरेड की पुण्य स्मृति में लीन होते हुए दिखाई देते हैं तो प्रतिबद्ध प्रगतिवादियों के साथ खड़े दिखाई देते हैं।[13]

यहाँ शमशेर बहादुर पूछते हैं कि समाज में दरिद्रता, भयंकर मृत्यु, क्रूरता, बुद्धि का दिवालियापन तथा बेरोजगार मजदूर क्या सत्य के रूप नहीं है? इसके लिए शोषितों, पीड़ितों को एक जुट होने तथा अपने अधिकार हेतु उठ खड़े होने की बात करते हैं–

बात बोलेगी / हम नहीं।
भेद खोलेगी / बात ही।
सत्य का मुख / झूठ की आँखे / क्या देखें!
X X X X X
दैन्य दानव, काल / भीषण; क्रूर
स्थिति, कंगाल / बुद्धि; घर मजूर।
सत्य का / क्या रंग हैं? / पूछो / एक संग।
X X X X X

Scanned with OKEN Scanner

दैन्य दानव। क्रूर स्थिति। कंगाल बुद्धि : मजूर घर भर।
एक जनता का अमर वरः
एकता का स्वर। – अन्यथा स्वातंत्र्य–इति।[14]

इस तरह अपने तमाम आत्मपरक रोमानी रूझानों, रूपवादी आकर्षणों के बावजूद शमशेर सदा से अत्यन्त खरी और कड़ी सामाजिक चेतना को भी सत्व लिए रहें है और यह चेतना प्रगतिशील आस्थाओं से जुड़ी रही है –

ईश्वर अगर मैंने अरबी में,
प्रार्थना की तू मुझसे/नाराज हो जायेगा?
अल्लाह यदि मैंने संस्कृत में/संध्या कर ली तू
मुझे दोजख में डालेगा?
लोग तो यही कहते घूम रहे हैं;
बता, ईश्वर/ तू ही समझा मेरे अल्लाह।[15]

जह हिन्द! ये पीछे से हमला
अल्लाह अबकर,/बुजदिल चाकू
यह 'धर्म' था हत्यारा पहला,
या 'मजहब' था कातिल डाकू/जो भी हो हिन्दू,
या मुस्लिम/ ये 'धर्म' और 'मजहब' वाले है।[16]

ऐसी ही अनेक पंक्तियों से गुजरते हुए आश्चर्य होता है कि शमशेर जैसा कोमल सौन्दर्य–सवेंदनाओं और रूप चित्रों का प्रभावकारी, आत्मपरक चितेरा कवि और कलाकार सामाजिक व्यंग्य की जमीन पर भी इतनी दृढ़ता के साथ पैर रोपकर खड़ा हो सकता है और इस प्रकार के तेवरों में बात कर सकता है।

अशोक बाजपेयी के अनुसार शमशेर की सजग संवेदनशीलता का एक दुर्लभ पक्ष उन कविताओं में मिलता है जो उन्होंने दूसरे कवियों–कलाकारों के लिए लिखी हैं– यह भी भावात्मक अद्वैतवाद की देन है, अहम् का विलोपन है; रचनात्मकता के प्रति गहरी पैठ, ललक और सम्मान का प्रमाण है कि हिन्दी में सबसे अधिक कविताएँ दूसरे कवियों, कलाकारों, चित्रकारों आदि के बारे में उन्होंने ही लिखा है। निराला, अज्ञेय, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल महादेवी, मुक्तिबोध, त्रिलोचन, मोहन राकेश, मदर टेरेसा गिन्सवर्ग इत्यादि कवियों पर लिखी गयी उनकी कविताएँ जहाँ एक तरफ सृजन धर्मियों की एक आत्मीय बिरादरी से हमारा घनिष्ठ और आत्मीय संम्पर्क बनाती हैं, वहीं दूसरी तरफ शमशेर के सौन्दर्य व प्रेम से परिपूर्ण व्यक्तित्व को भी दर्शाती है, जिसमें किसी को न तो नीचा दिखाने की प्रवृत्ति है और न ही होड़ करके आगे बढ़ जाने की प्रवृत्ति। शमशेर बहादुर सिंह अपनी काव्यगत विशिष्ट विशेषताओं के कारण चिंतकों/आलोचकों के सन्मुख अनेकानेक प्रश्न खड़ा कर देते हैं। शमशेर को कहाँ रखा जाय? दूसरे सप्तक का कवि मानकर क्या 'नयीं कविता' का कवि मान लिया जाय? प्रयोगवादी कवियों ने जिस तरह अपने को छायावादी विचार चेतना ने अलगाने तथा प्रगतिवाद की प्रचारवादी भाषण–शैली से हटाने की चेष्टा की है उससे शमशेर अलग हैं।.....

हाँ उन्हें निराला और मुक्तिबोध की परंपरा से जोड़ा जा सकता है– वह भी आत्मसंघर्ष के आधार पर।

निराला ने अपने जीवन संघर्ष के लिए नयी भाषा–शैली अन्वेषित की और मुक्तिबोध ने भी। वे दोनों ही कवि निरंतर जीवन संघर्ष करते रहे। शमशेर निराला के प्रति लिखते हैं–

हाँ तुम्हीं हो, एक मेरे कवि / जानता क्या मैं–
हृदय में भरकर तुम्हारी साँस– / किस तरह गाता।
(ओ विभूति परंपरा की!)
समझ भी पाता तुम्हें यदि मैं कि जितना चाहता हूँ,
महाकवि मेरे!

निराला का सन्दर्भ अधिक व्यापक, जटिल और दाहक है। शमशेर का निजागत व्यक्तिगत। शमशेर बहादुर सिंह न अज्ञेय की तरह कला के प्रति अत्यधिक सचेत हैं और न मुक्तिबोध की तरह प्रतिबद्ध। वे रोमैंटिक होकर भी रोमैंटिक नहीं हैं प्रगतिवादी होकर भी प्रगतिवादी नहीं हैं, प्रयोगवादी होकर भी प्रयोगवादी नहीं है और अगर कुछ है तो वह 'विशुद्ध कवि'। इस प्रकार शमशेर की कविताओं में प्राप्त जीवन सौन्दर्य एवं रोमांस किसी एक खूँटे से बँधा हुआ न होकर सतत् विकासमान रहा है, जिसमें मनुष्य–प्रकृति, व्यक्ति–समाज, देश–संसार सभी कुछ जीवन्त हो उठता है। वह भी किसी एक कोण से नहीं बल्कि विभिन्न कोणों से, क्योंकि शमशेर एक सक्षम चित्रकार भी थे। इसीलिए तो डॉ० नन्दकिशोर नवल ने शमशेर को हिन्दी के प्रगतिशील कवियों में ही नहीं सभी आधुनिक कवियों में 'विशिष्ट कवि' या 'कवियों का कवि' कहा है।

सन्दर्भ सूची

1. शमशेर बहादुर सिंह, प्रतिनिधि कविताएँ, 'गजल' पृष्ठ–61
2. जनपक्ष–10, पत्रिका, जुलाई–सितम्बर, 2010, पृष्ठ– 67
3. शमशेर बहादुर सिंह, प्रतिनिधि कविताएँ, 'चुका भी हूँ मैं नहीं।' पृष्ठ – 30
4. शमशेर बहादुर सिंह, प्रतिनिधि कविताएँ, 'एक ठोस बदन अष्टधातु का सा' पृष्ठ– 184
5. शमशेर बहादुर सिंह, प्रतिनिधि कविताएँ, 'प्रेयसी–तीन' पृष्ठ– 186
6. शमशेर बहादुर सिंह, प्रतिनिधि कविताएँ, 'वह सलोना जिस्म' पृष्ठ– 88
7. जनपक्ष–10, पत्रिका, जुलाई–'सितंबर–2010, पृष्ठ – 36
8. शमशेर बहादुर सिंह, प्रतिनिधि कविताएँ, 'सौन्दर्य'– पृष्ठ– 133–134
9. शमशेर बहादुर सिंह, प्रतिनिधि कविताएँ, 'लेकर सीधा नारा' पृष्ठ– 31
10. शमशेर बहादुर सिंह, प्रतिनिधि कविताएँ, 'लो युग आ', पृष्ठ– 121
11. शमशेर बहादुर सिंह, प्रतिनिधि कविताएँ,' टूटी हुई, बिखरी हुई, पृष्ठ – 110
12. शमशेर बहादुर सिंह, प्रतिनिधि कविताएँ, 'निराला के प्रति' पृष्ठ– 21
13. शमशेर बहादुर सिंह, प्रतिनिधि कविताएँ, 'वाम वाम वाम दिशा– पृष्ठ–47
14. शमशेर बहादुर सिंह, प्रतिनिधि कविताएँ, 'बात बोलेगी' पृष्ठ– 43–44
15. शमशेर बहादुर सिंह, 'चुका भी नहीं हूँ मैं,' 'ईश्वर अगर मैंने अरबी में प्रार्थना की,' पृ० 100
16. शमशेर बहादुर सिंह, 'बात बोलेगी', 'धर्म और मजहब वाले', पृष्ठ– 51